Indian J. Soc. & Pol. 10 (02) :67-70 : 2023 **ISSN: 2348-0084 (PRINT)**
31 JULY 2023 **ISSN: 2455-2127(ONLINE)**

सतत पोषणीय विकास–एक अध्ययन

प्रशान्त पाण्डेय[1]

[1]असिस्टेंट प्रोफेसर, भूगोल, डी0सी0एस0के0पी0जी0 कालेज, मऊ, उ0प्र0, भारत

ABSTRACT

मानव एक क्रियाशील प्राणी है। इसलिए उसे सतत पोषणीय विकास की मूलभूत पर्यावरणीय वैश्विक सामूहिक धरोहर के प्रति चिंता, सुरक्षा और उसकी गुणवत्ता में लगातार सुधार स्वाभाविक है। जिससे सतत् विकास सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय उद्देश्यों की पूर्ति करते हुए आगे बढ़ा जा सके। "सतत पोषणीय विकास वह है जो भावी पीढ़ी की जरूरतों को पूरा करने की योग्यता से समझौता किये बगैर वर्तमान पीढ़ी की जरूरतों को पूरा करता है।

KEYWORDS- *सतत पोषणीय, वैश्विकरण, GHE (ग्रीन हाऊस प्रभाव) GHG (ग्रीन हाऊस गैस) जैवविविधता, कार्बन फूट प्रिंट*

आधुनिक मानव ने जिस प्रकार से सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक रूप से प्रकृति और पर्यावरण का अंधाधुंध नुकासान किया है। वह एक गंभीर चिंता का विषय बना हुआ है। जो भविष्य की पीढ़ियों को अत्याधिक नुकसान पहुँचा सकता है। जो पूरी दुनिया के समक्ष एक गंभीर चुनौती के रूप में उठ खड़ा हुआ और सभी लोग चिंतित हो गये और इस खतरे से निपटने के लिए सोचने को मजबूर हो गये। जिसका परिणाम यह हुआ कि सतत पोषणीय विचारधारा का उदय सन् 1960 के अंत में और 1970 के दशक के प्रारंभ में बारबरा वार्ड लेड़ी जैक्सन (पर्यावरण और विकास अंतर्राष्ट्रीय संस्थान की संस्थापक) ने पूरी दुनिया के सामने पहली बार सतत विकास से परिचित कराया– 'विकास के मशीनीकरण या औद्योगीकरण आधारित सिद्धान्त के एक विकल्प और समालोचना के तौर पर, जिसके कारण हर तरफ प्रदूषण बढ़ा, बिमारियों का प्रसार हुआ, जैव–विविधता का ह्रास हुआ, वैश्विक तापन, समुद्री, जल स्तर में वृद्धि, रखने का प्रयास किया।

सतत विकास जो प्रकृति में निरंतरता को बनाये रखे तात्पर्य एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को आसानी से दी जाने वाली विरासत अर्थात् प्राकृतिक धरोहर जिसको हम अपनी आने वाली वंशजों को आसानी से दे सकते हैं। यह तब संभव होगा जब हम गांधी जी की विचारधारा–''हमारे पास हर व्यक्ति की आवश्कता पूर्ति के लिए बहुत कुछ है लेकिन किसी के लालच की संतुष्टि के लिए नहीं है।'' का अनुपालन करते हुए प्रकृति और पर्यावरण को संरक्षित करते हुए हम अपनी आने वाली पीढ़ी को सुरक्षित अपनी धरोहर दे पायेंगे। –1

औद्योगीकरण के इन प्रभावों के साथ–साथ यह भी महसूस किया गया कि विकास की इस प्रक्रिया को लम्बे समय तक कायम नहीं रखा जा सकता है क्योंकि लगातार प्राकृतिक संसाधन (जैसे–जीवाश्म ईधन, प्राकृतिक वनस्पितयाँ, जीव–जन्तु, दुर्लभ प्रजातियाँ आदि) जिनको एक बार समाप्ति के बाद पुनः उत्पादित नहीं किया जा सकता है। इस कारण से, संसाधनों की भौतिक अवस्था और उनके प्रयोग का पर्यावरण पर प्रभाव को देखते हुए प्राकृतिक संसाधनों के प्रति न्यायसंगत तरीके से उपभोग करने के तरीके पर जोरदार पहल करके लोगों को जागरूक करने का प्रयास किया गया। 1970 के दशक में विचार था कि 'पृथ्वी की वहन क्षमता' सीमित है। इसलिए एक सीमा से ज्यादा संसाधनों का दोहन नहीं कर सकते हैं तथा पृथ्वी पर अपशिष्ट पदार्थों को अवशोषित करने की क्षमता भी सीमित है। इसलिए हमें प्रकृति में कचरा कम से कम करने का प्रयास करना चाहिए।

जून 1992 में ब्राजील में सतत पोषणीय विकास पर आयोजित सम्मेंलन में 'पर्यावरण और विकास' विषय पर संयुक्त राष्ट्र संघ का एक प्रमुख विषय था। यहाँ पर सतत विकास को ध्यान में रखते हुए विश्व जनसंख्या वृद्धि और उपभोग को एक चुनौती के रूप में स्वीकार किया। रियो पृथ्वी सम्मेंलन 1992 में, सतत विकास के सिद्धान्त को केवल भौतिक पर्यावरणीय चिंताओं से परे देखने का प्रयास किया गया। इस एजेंडे में वैश्विक नेताओं द्वारा परंपरागत रूप से ऊपर उठकर पर्यावरणीय समस्याओं को दूर करने का प्रयास किया गया। जिसमें ग्रीन हाऊस गैस निरंतर निर्माण CFC (क्लोरोफ्लोरो कार्बन) द्वारा ओजोन रिक्तीकरण आदि। एजेंडा–21 का वास्तविक प्रस्ताव 21वीं सदी में सतत पोषणीय विकास को प्राप्त करने के लिए आवश्यक खाके का निर्माण किया गया। 1995 में सतत विकास आयोग ने विकास की 130 संकेतों के कार्यक्रम को अपनाने का प्रयास किया, जिसमें शिक्षा, स्वास्थ्य, जनसंख्या, गरीबी मलिन बस्तियां (जिनको तृतीय विश्व की संज्ञा दी जाती है।) की सामजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक समस्याओं के बीच में अर्न्तसम्बन्ध को स्थापित कर सतत विकास के वैश्विक सम्मलन (जोहांसबर्ग 2002) में इस बात पर जोर दिया गया।

1: Corresponding Author

1. पर्यावरणीय क्षति के प्रतिकूल प्रभाव से निपटने के लिए स्वास्थ्य, शिक्षा और बेरोजगारी जैसी बुनियादी समस्याओं से निपटने के लिए मूल ढ़ांचें में सुधार।

2. सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक विकास के प्राकृतिक संसाधनों के आधार पर संरक्षण और प्रबन्धन।

3. वैश्विकरण की दुनिया में अर्थव्यवस्थाओं और समाजों का एकीकरण

4. बायोभास और ऊर्जा का सतत उपयोग।

5. ज्यादा स्वच्छ उत्पादन और पर्यावरणीय कुशलता पर ध्यानकर्षण।

6. विकसित देशों के उत्पादन और उपभोग के तरीके में बदलाव। –3

1983 में यू.एन. के महासचिव ने नार्वे के पूर्व प्रधानमंत्री ग्रो हार्लेन ब्रन्टलैण्ड को संयुक्त राष्ट्र संघ से पर्यावरण और विकास के मुद्दे पर एक आयोग गठन करने की माँग किया जिससे समस्याओं का निस्तारण किया जा सके। इस नये संगठन को ब्रन्टलैण्ड कमीशन या विश्व पर्यावरण विकास आयोग के नाम से जाना जाता है। आयोग ने ध्येय वाक्य ''हमारा सामूहिक विकास'' जारी किया। की विकास' जो कि भविष्य की पीढ़ियों को अपनी जरूरतों को पूरा करने की दक्षता के साथ बिना समझौता किये वर्तमान की जरूरतों को पूरा करना इसके पक्ष में निम्न तर्क प्रस्तुत किये गये–

1. मानव की आर्थिक गतिविधियाँ एक बृहद पारिस्थितिकीय तंत्र के रूप में की जाती है। लेकिन मानव जनहित प्रदूषण और प्राकृतिक संसाधनों में निरंतर कमी और इसके दुष्परिणाम हैं।

2. सम्पूर्ण विश्व में जनसंख्या में निरंतर वृद्धि जिसके कारण पृथ्वी के आयतन में निरंतर कमी।

3. आर्थिक विकास के चलते पर्यावरणीय ह्रास।

इसके साथ–साथ असतता के कुछ परस्पर अंतनिर्भर लक्षणों को भी अपनाया गया–

1. हरित गृह प्रभाव और जलवायु परिवर्तन।

2. ग्लेश्यिर का सिकुड़ना।

3. समुद्री जल स्तर में वृद्धि।

4. ओजोन क्षरण।

5. अम्लीय वर्षा।

6. निर्वनीकरण, भूमि क्षरण और मरूस्थलीकरण।

7. अनवीकरणीय संसाधनों (कोयला, पेट्रोलियम, प्राकृतिक गैस जीवाश्म ईंधन और खनिज संसाधन)

8. ठोस कचरा/अपशिष्ट में निरंतर वृद्धि, जैसे पर्यावरणीय मुद्दे उभर कर सामने आये।–4

उपरोक्त समस्याओं का निस्तारण विश्व के सामने एक और चुनौती के रूप में आया, जिसका हल ढूढ़ने का प्रयास किया गया और उसमें निम्न सुझाव आये–हमारी तकनीकों, आदतों, उपभोग सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक व्यवहार के साथ सामंजस्य स्थापित करते हुए 'पारिस्थितिकी पुनः निर्माण' को मुद्दे नजर रखते हुए वार्ता प्रारंभ की गयी।

सतत विकास के मूलभूत लक्ष्य

पर्यावरणीय समस्याओं से निपटने के लिए सतत विकास के 17 लक्ष्य रखे गये, जो निम्नलिखित हैं–1. विश्व भर में गरीबी उन्मूलन 2. अच्छे स्वास्थ्य और कल्याण को बढ़ावा देना 3. सभी को गुणवर्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना। 4. स्वच्छ जल और स्वच्छता के लक्ष्य को हासिल करना। 5. सस्ती और स्वच्छ ऊर्जा घर–घर पहुँचाना 6. सामावेशी और सतत औद्योगीकरण का समर्थन करते हुए नवाचार को बढ़ावा देना 7. लिंग भेद समाप्त करना 8. लक्ष्यों में भागीदारी 9. शांति न्याय और सशक्त संस्थाओं का निर्माण 10. थलीय जीवों की सुरक्षा 11. जलीय जीवों की सुरक्षा 12. बाल मृत्यु दर में कमी लाना 13. मातृ स्वास्थ्य में सुधार करना 14. एच आई वी/ एड्स, मलेरिया, टी.वी जैसी घातक बीमारियों का उन्मूलन करना। 15. विकास के लिए एक वैश्विक साझेदारी विकसित करना 16. आर्थिक विकास 17. जलवायु परिवर्तन और उनके प्रभावों से निपटने के लिए तत्काल कार्यवाही करना।

सतत विकास के महत्वपूर्ण मानक

पूरी दुनिया के वैज्ञानिक और पर्यावरणविदों ने 1970 और 1980 के दशक में वैश्विक वायुमण्डलीय प्रदूषण और उनके दुष्परिणामों पर अपने ध्यान को आकृष्ट किया। इस विषय पर संयुक्त राष्ट्र संघ 1972 ने जलवायु परिवर्तन सम्बन्धी मुद्दे को गम्भीरता पूर्वक उठाया। 1992 मं रियो अर्थ शिखर सम्मेंलन में जलवायु परिवर्तन और सतत विकास संयुक्त राष्ट्र ने फ्रेमवर्क सम्मेंलन किया और 154 देशों से हस्ताक्षर कराकर ग्रीन हाउस गैस (जी एच जी) को एक मानक के अनुरूप स्थिर रखने पर सहमति बनी। सम्मेंलन के सभी पक्षकारों ने 1997 के क्योटो प्रोटोकाल को अपनाते हुए इन गैसों (जी एच जी) के उत्सर्जन को बनाए रखने या बढ़ाने के लिए या कम करने या उत्सर्जन व्यापार में संलग्न होने के प्रति प्रतिबद्ध है। दुनिया के सभी विकसित को प्रोटोकाल के तहत GHG को कम करने हिदायत दी गयी।

सतत पोषणीय विकास में शिक्षा की भूमिका

सतत पोषणीय विकास में शिक्षा की भूमिका बहुत ही महत्वपूर्ण है। इसको एक उदाहरण से समझा जा सकता है– लोगों ने अरस्तु से शिक्षा के महत्व को पूछा कि शिक्षित और अशिक्षित में क्या अन्तर है ? तब उन्होंने कहा– ''जिस प्रकार जीवित व्यक्ति मृतकों की तुलना में बेहतर होते हैं।'' शिक्षा के माध्यम से ही पर्यावरणीय सामाजिक और आर्थिक कल्याण को वर्तमान और भविष्य

दोनों पीढ़ियों के लिए सुरक्षित उपाय है। इसके लिए निम्न उपाय है–

1. सतत विकास के प्रति समाज को प्रोत्साहित करना 2. सतत विकास के सम्पूर्ण सिद्धान्तों और कार्यों का एकीकरण करते हुए इसे वास्तविक धरातल पर पूर्णतः उतारने का प्रयास करना। 3. इसमें सरकारी गैर–सरकारी संगठनों, नागरिक समाज और आम जनता को सम्मिलित करते हुए उनके सहयोग को लेना। 4. सतत विकास की शिक्षा के माध्यम से समाज और पर्यावरण के मध्य जटिल समस्याओं जैसे– गरीबी, बेरोजगारी, अशिक्षा, व्यर्थ उपभोग– पर्यावरणीय गिरावट, जनसंख्या वृद्धि, लिंग भेद, स्वास्थ्य और मानवाधिकारों का उल्लंघन आदि भविष्य के खतरों से लोगों को जागरूक करना।

गरीबी तथा अन्य सामाजिक आर्थिक पिछड़ेपन की समाप्ति

मर्रे बुकचिन ने दुनिया को अपने तर्क के माध्यम से बताया कि परिस्थिति की संकट और मानवीय जीवन में खड़ी होने वाली व्युत्क्रमता हमारी भोगवादी, सत्तावादी, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक ढ़ांचे के परिणाम है। इन उपरोक्त सभी समस्याओं का समाधान तब तक संभव नहीं है जब तक हम अपनी आदतों में सुधार नहीं करते, वही तब होगा जब मनुष्य प्रकृति के प्रकोप से डरेगा तभी जाकर वह सावधान होगा। जोहांसबर्ग सम्मेंलन (2002) में विकसित राष्ट्रों ने तृतीय विश्व के देशों की गरीबी और समस्या के निपटारे के लिए उन्होंने अपनी राष्ट्रीय आय का 0.7 प्रतिशत अनुदान के तौर पर गरीब राष्ट्रों को देने की वचनबद्धता दुहरायी। जिसका वास्तविक परिणाम आज के दौर में विकास बहुत धीमी गति से अग्रसर है।

सतत विकास की दिशा में किये गये प्रयास

1980 से लेकर आज तक सतत विकास में निरंतर सराहनीय प्रयास किये जा रहे हैं–

1. सतत विकास पर विश्व शिखर सम्मेंलन जिसे रियो+10 भी कहा जाता है, जोहांसबर्ग सम्मेंलन का परिणाम था, जिसका केन्द्र बिन्दु– स्वच्छ जल, स्वच्छता, पर्याप्त आश्रय, ऊर्जा, स्वास्थ्य, सुरक्षा, खाद्य सुरक्षा और जैव विविधता को संरक्षण जैसे प्रमुख बुनियादी आवश्यकताओं में निरंतर वृद्धि करना था। जिससे वैश्विक समृद्धि सुरक्षा और सतता के खतरे को समाप्त किया जा सके।
2. वैज्ञानिक प्रयासों को और अधिक उन्नत बनाना जिससे जलवायु परिवर्तन/पद्धतियों को मानव जान सके और अपनी–अपनी भूमिका को सुनिश्चित करे।
3. ऊर्जा के वैकल्पिक स्त्रोतों (सौर्य ऊर्जा, ज्वारीय ऊर्जा, पवन ऊर्जा आदि) को ज्यादा से ज्यादा विकसित करके ऊर्जा का आधार अकार्बनीकरण विकसित किया जा सके।
4. विलुप्त प्राय जीव–जन्तु, वनस्पतियाँ, मानवीय प्रजातियाँ आदि को संरक्षित कर उनके बढ़ाने का कार्य लगातार किया जा रहा है।
5. वैश्विक स्तर पर वनारोपण कार्यक्रम चलाया जा रहा है।
6. शैक्षणिक कार्यक्रमों (बैनर, पोस्टर, मीटिंग, सीटिंग, नुक्कड़, नाटक आदि) जिससे लोगों के बीच जागरूकता लायी जा सके ओर लोग अपने क्रियाकलापों और व्यवहार में बदलाव लायें।
7. ओजोन परत के क्षरण को रोकने के लिए उपाय करना सक्त से सक्त कानून बनाकर जहरीले रसायनों पर रोक लगाते हुए गलत और गेर जिम्मेंदार लोगों को सजा दिलाना।
8. जनसंख्या को नियंत्रित करने के सक्त कानून बनाकर उनका अनुपालन कराया जाय।
9. कार्बन व्यापार को देशों के बीच निरंतर संबंधित किया जा रहा है जिससे पर्यावरण को सुरक्षित और संरक्षित किया जा सके।

निष्कर्ष

सतत पोषणीय विकास एक बहुआयामी विकास की प्रक्रिया है जिसमें लोगों की मूलभूत आवश्यकताओं, स्वास्थ्य, शिक्षा, बेरोजगारी, भूखमरी, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक असमानता को दूर करते हुए विज्ञान और प्रौद्योगिकी के माध्यम से बड़े पैमाने पर औद्योगिकीकरण और प्राकृतिक संसाधनों के अति दोहन को विवेकपूर्ण ढ़ंग से उपयोग को बढ़ावा देता है। वैसे तो इतिहास गवाह है जैसे –जैसे मानव ने विकास किया प्रकृति का सर्वनाश ही किया है। इसके बावजूद जनजीतीय लोगों की निम्न– कार्बन फूट प्रिंट जीवन में हजारों वर्षों तक वैश्विक पर्यावरण को संरक्षित रखा और लोगों को सीख दी।

REFERENCES

यूएन (2006), यूनाइटेड नेशन फ्रेम वर्क कनेक्शन आन क्लाइमेंट चेन्ज Retrieved from http:/unfccc.int/resaource/docs/publications/handbook pdf.

यूएनईसीई (2016) टेन इयर्स आफ दी यूएनईसीई स्ट्रेटजी फार एजुकेशन फार सस्टेनेबल डेवलपमेंट

इन्सा जे (2019) सस्टेनेबल डेवलपमेंट : मीनिंग्स हिस्ट्री, प्रिन्सिपल्स पिलर्स एण्ड इम्पिलिकेशन्स फार हयूमन एक्शन, लिटरेचर रिब्यू, कोजेन्ट सोशल साइन्स 5(1)

ईमास, आर (1993) *दी कान्सेप्ट ऑफसस्टेनेबल डेवलपमेंटः डिफिनेशन्स एण्ड डिफाइनिंग प्रिंसिपल्स*

कोठारी, आशीष (1993), इज सस्टेनेबल डेवलपमेंट डिजायरेबल एण्ड पांसिबल, *इण्डियन जर्नल आफ पब्लिक एडमिनिस्टेशन,* वाल्यू0 XXXIX No 3 जुलाई –सितम्बर

मरे बुकचिन (1962), *हमारा सिंथेटिक पर्यावरण*

मिश्रा, आर पी (2010) *सेमिनार लेक्चर,* 12–14 नवम्बर 2010

वर्ल्ड बैंक (2010) वर्ल्ड डेवलपमेंट रिपोर्ट 2010: डेवलपमेंट एण्ड क्लाइमेंट चेंज

वर्ल्ड कमीशन आन एनवायरर्नमेंट एण्ड डेवलपमेंट, आवर कामन फयूचर, (1987) न्यूयार्क, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस